19. दादी जी के महावाक्य

सुखदाता ने हमें अनेक वरदान दे दिये हैं, फिर हम प्रकृति के धर्म में आकर रावण का श्राप क्यों लें? जिस घड़ी हमने ईश्वरीय जन्म लिया उसी घड़ी हम मर्यादाओं के सूत्र में, सेवा के सूत्र में, नयी दुनिया में चलने के सूत्र में बँध गये। बाबा ने नये राज्य का ताज–तख्त देने का सूत्र बाँध दिया।

जन्मपत्री, जन्मते ही एक बार बनती, फिर थोड़े ही बनती? मिटाने वाले ने सबकुछ मिटा दिया, देने वाले ने सबकुछ दे दिया, इसी स्थिति में सदा रहो तो कभी कोई चिंता, परचिंतन, अहम्–वहम् नहीं होगा। सब समाप्त हो जायेगा।

पांडवों को, महावीरों को सभी शक्तियों की रक्षा करनी है। पांडवों को बाबा ने रक्षक बानाया है। रक्षक कभी भक्षक नहीं होते। ऐसा समझो हम सभी बाबा के इस बेहद यज्ञ के रक्षक हैं। फिर जो असुरों के विघ्न आते हैं उनसे रक्षा हो जायेगी। ड्रामा के लास्ट में भी जैसे अनेक सीरियस सीनरी आती, ऐसे यहाँ भी अनेक असुरों के विघ्न आते हैं। उन सबको आप महावीर पांडवों को अपने योग की स्थिति से समाप्त कर रक्षक बनना है। इस समय दुनिया में कीचक बहुत हैं। छोटी–छोटी बच्चियों को बाबा ने सीट दी है, उनकी संभाल करनी है, तभी हम सब विघ्नों से पार हो घर चलेंगे।

देवताओं को इशारा ही बहुत है। इसलिए अब वह समय गुजर गया, बचपन की बातें, हँसी–मजाक, खेलकूद, रूसना इनसे ऊपर जाना है। गुड़ियों का खेल अब समाप्त करो।

बाबा ने हमें कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझायी है। अब विकर्म और कर्म का खाता समाप्त। अब हम अकर्म की लाइन में आ रहे हैं। जब हमारे सब खाते चुक्तू हों तब हम उड़ें। अब हम अकर्मी की स्टेज पर खुद को देखें तो सतयुग की दुनिया में चले जायेंगे। अब कोई लेन–देन का, पाप–पुण्य का खाता भी नहीं। बाबा ने हमें सभी पुण्यों का वर्सा दिया है। ऐसा नहीं कि अब हमें कोई पुण्य का खाता बनाना है। अब तो कर्मातीत स्थिति का अनुभव करना है, तभी बहुत मजा आयेगा। अब सब खाते समाप्त करो।

ओम् शांति।